सूरदास

सूरदास भक्ति काव्य परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण को आधार बनाकर उच्च कोटि के साहित्य की रचना की है। अन्य प्राचीन और मध्यकालीन कवियों की तरह ही सूर ने भी अपने बारे में लगभग नहीं के बराबर लिखा है। यही वजह है कि, उनके जन्म, समय आदि के विषय में मतभेद की स्थिति रही है। मिश्र बंधु, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ0 राम कुमार वर्मा आदि सूर का जन्म संवत् 1540 वि0 में मानते हैं। इस आधार पर सूर का जन्म सन् 1483 ई0 में निश्चित होता है, लेकिन 'सूर निर्णय' के लेखक (मीतल और पारीख) सूर का जन्म संवत् 1533 वि0 में मानते हैं। उनके अनुसार सूर आयु में वल्लभाचार्य से दस दिन छोटे थे। आचार्य वल्लभ का जन्म संवत् 1535 वि0 वैशाख कृष्ण एकादशी रविवार को हुआ था। इस आधार पर सूरदास का जन्म वैशाख शुक्ल पंचमी मंगलवार संवत् 1535 वि0 अर्थात सन् 1478 ई0 निश्चित होता है। वल्लभाचार्य 'सूर सारावली' का रचना काल संवत् 1602 वि0 अर्थात सन् 1545 ई0 मानते हैं। उस समय सूर 67 वर्ष के थे। इस आधार पर भी सूर का जन्म सन् 1478 ई0 ठहरता है।

यह असंदिग्ध है कि, सूरदास वल्लभाचार्य के प्रसिद्ध शिष्य थे। वल्लभाचार्य के पुत्र आचार्य विट्ठलनाथजी ने अपने पिता की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों व अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' बनाया था। इसमें भी उन्होंने सूर को प्रमुख स्थान दिया था। उन्हें 'अष्टछाप के जहाज ' की संज्ञा दी गई है।

रचनाएँ

सूरदास की तीन प्रामाणिक रचनाओं की प्राय: चर्चा होती है। इनमें सूरसारावली, साहित्य लहरी और सूर सागर सम्मिलित हैं। 'सूरसागर' सूरदास की अक्षय कीर्ति का आधार है।

सूरदास ने ब्रजभाषा में रचनाएं की हैं। यह उनकी मातृभाषा होने के साथ-साथ उनके आराध्य की कीड़ाभूमि ब्रज प्रदेश की लोक भाषा भी है। सूर ने ब्रजभाषा को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। विद्वान इन्हें ब्रजभाषा का बाल्मीकि तक कहते हैं।

सूर का सम्यक् मूल्यांकन करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अत्यंत मार्मिक टिप्पणी की है :

"तुलसी की प्रतिभा सर्वतोमुखी है और सूर की एकमुखी। पर एकमुखी होकर उसने अपनी दिशा में जितनी दूर तक की दौड़ लगाई है उतनी दूर तक की तुलसी ने भी नहीं; और किसी कवि की

तो बात ही क्या है।" जिस क्षेत्र को सूर ने चुना है, उस पर उनका अधिकार अपरिमित है, उसके वे सम्राट हैं।" (भ्रमरगीत सार की भूमिका पृ0 37)

संकलन में सूर साहित्य के वैशिष्ट्य से संक्षेप में आपका परिचय करने का विचार किया गया है। इसी योजना को ध्यान में रखते हुए सूर-साहित्य के तीन अंश 1. विनय के पद, 2. वात्सल्य के पद और 3. भ्रमर गीत रखे गये हैं। ये तीनों ही अंश आपको सूर की कविताई और उनके भक्त-रूप से भली-भांति परिचित करायेंगे। यहाँ संकलित अंशों के अध्ययन की सुविधा का ध्यान रखते हुए कुछ संकेत दिए जा रहे हैं-

विनय के पद

सूरदास सबसे पहले भक्त हैं। कविता आराध्य श्रीकृष्ण को याद करने का बहाना भर है। विनय के पद इसी बात का समर्थन करते हैं। भक्त अपने आपको नितांत क्षुद्र-हेय साबित करता हुआ आराध्य की कृपा की आकांक्षा रखता है। वह अपने प्रभु को गारिमामय, सामर्थ्यवान और करुणाशील के रूप में चित्रित करता है, जबकि स्वयं को सबसे बड़े पापी के रूप में देखता है- 'प्रभु हौं सब पतितनि कौ टीकौ'।

गोस्वामी तुलसीदास की विनय पद्धति इससे भिन्न नहीं है-

"तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं। प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंज-हारी"।।

इसी पाठ्यपुस्तक में तुलसी की विनय पत्रिका के भी अंश है। सूरदास और तुलसीदास दोनों के विनय संबंधी पदों को एक साथ पढ़ कर देखेंगे तो आपको विनय की परंपरा का अच्छा ज्ञान प्राप्त होगा।

पद संख्या 1 में सूरदास अपने करुणामय स्वामी श्रीकृष्ण की बार-बार वंदना करते हैं क्योंकि उनके प्रभु सब कुछ करने में समर्थ हैं। उनकी कृपा मात्र से असंभव से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।

श्रीकृष्ण पतितों को शरण देने वाले हैं। दुखियों के कष्टों का निवारण करने वाले हैं। इसीलिए वे सूर को आकर्षित करते हैं। पद संख्या 3 में सूर ने यही भाव व्यक्त किया है। सूर के प्रभु विपत्ति के मित्र हैं। यह सिर्फ कहने मात्र के लिए नहीं है। आजमाई हुई बात है। लाक्षागृह से पाण्डवों की प्राण रक्षा, अंबरीष का दुर्वासा ऋषि के शाप से बचाव जैसे बहुत सारे प्रमाण हैं। पद संख्या 4 में सूर ने संकट हरण करने वाले प्रभु का गुणगान किया है।

पद संख्या 11 में सूर ने अपने उद्धार के लिए श्रीकृष्ण से शरण की याचना की है। मुक्ति के लिए अज्ञान या भ्रम का परिहार अत्यावश्यक होता है। इसीलिए सूर श्रीकृष्ण से अपनी सारी अविद्या दूर करने की प्रार्थना करते हैं। पद संख्या 14 में सूरदास समदर्शी प्रभु से अपने अवगुणों का ध्यान नहीं रखने की प्रार्थना करते हैं। इस तरह सूर अपने विनय के पदों में एक सच्चे निरीह भक्त के रूप में सामने आते हैं। अपनी मुक्ति के लिए वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण से बार-बार याचना करते हैं और उन्हें विश्वास भी है कि, वे मुक्त हो जायेंगे क्योंकि उनके प्रभु संकटमोचन हैं, दीनानाथ है, दीनदयाल हैं, समदर्शी हैं, आदि आदि।

विनय के पद

मंगलाचरण। राग बिलावल

चरन कमल बंदौ[1] हरि राइ। — आराध्य की कृपा
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै[2] अंधे कौ सब कछु दरसाइ[3]।। — की आकांक्षा
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै रंक[4] चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करूनामय[5] बार बार बंदौ ँ तिहिँ पाइ।। 1।।

सगुणोपासना। राग कान्हरौ।।

अबिगत[6] गति कछु कहत न आवै।
ज्यो ँ गूँगे ँ मीठे फल कौ रस अंतरगत[7] ही भावैं। — सगुण की उपासना
परम स्वाद[8] सबही सु निरंतर अमित[9] तोष[10] उपजावै।
मन बानी कौ ँ अगम अगोचर[11] सो जानै जो पावै।।
रूप रेख गुन जाति जुगति बिनु निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहि ँ तातै ँ सूर सगुन पद गावै।। 2।।

राग बिलावल

काहू के कुल तन न बिचारत।
अबिगत की गति कहि न परति है, ब्याध[12] अजामिल[13] तारत[14]।। — सूर के प्रभु के गुण
कौन जाति अरु पाँति बिदुर[15] की ताही कैँ पग धारत।
भोजन करत माँगि घर उनकै ँ राज मान मद टारत।।
ऐसे जनम करम के ओछे[16] ओछनि हूँ ब्यौहारत।
यहै सुभाव सूर के प्रभु कौ भक्त बछल[17] प्रन पारत ।। 3।।

राग धनाश्री

ऐसैहिँ जनम बहुत बौरायौ[18]। — दुखियों का कष्ट
बिमुख[19] भयौ हरि चरन कमल तजि मन संतोष न आयौ।। — निवारण

---

1. *वंदना करता हूँ,* 2. *पार करता है,* 3. *दिखाई पड़ने लगता है,* 4. *कंगाल, दरिद्र* 5. *करूणायुक्त, दयामय,* 6. *अज्ञेय (ब्रह्मा)* 7. *मन ही मन* 9. *अपार* 10. *संतोष, तृप्ति* 11. *अलक्ष्य, अग्राह्य,* 12. *परिशिष्ट देखिए* 13. *परिशिष्ट देखिए* 14. *तारते हैं (मुक्ति प्रदान करते हैं)* 15. *परिशिष्ट देखिए,* 16. *हीन, छोटे* 17. *वत्सल,* 18. *पागल बना रहा,* 19. *दूर होकर, अलग होकर*

जब जब प्रगट भयौ जल थल मैं तब तब बहु बपु[20] धारे।
काम कोध मद लोभ मोह बस अतिहिं किए अब भारे।।
नृग[21] कपि[22] विप्र गीध[23] गनिका[24] गज़[25] कंस[26] केसि[27] खल[28] तारे।
अघ[29] बक[30] वृषभ[31] बकी[32] धेनुक[33] हति[34] भव जल निधि तैं उबारे।।
संखचूड़[35] मुष्टिक[36] प्रलंब[37] अरु तृनाबर्त[38] संहारे।
गज चानूर[39] हते दव नास्यौ ब्याल[40] मथ्यौ भयहारे।।
जन दुख जानि जमलद्रुम भंजन[41] अति आतुर ह्वै धाए।
गिरि कर धारि इन्द्र[42] मद मद्यौ[43], दासनि सुख उपजाएं।।
रिपु कच्च[44] गहत द्रुपद[45] तनया जब सरन सरन कहि भाषी[46]।।
बढ़े दुकूल कोट अंबर[48] लौं सभा माँझ पति राखी।।
मृतक जिवाइ दिए गुरू के सुत ब्याध परम गति पाई।
नन्द बरुन बंधन भय मोचन[49] सूर पतित सरनाई[50]।। 4।।

राग सोरठ

गोविंद गाढ़े[51] दिन के मीत।
गज अरु ब्रज प्रहलाद[52] द्रौपदी सुमिरत ही निहचीत[53]।।
लाखागृह[54] पांडवनि उबारे साक[55] पत्र मुख नाए।
अंबरीष[56] हित साप[57] निवारे ब्याकुल चले पराए।।
नृप कन्या कौ व्रत प्रतिपारयौ[58] कपट वेष इक धारयौ।
तामैं प्रगट भए श्रीपति जू अरि गन गर्व प्रहारयौ।।
कोटि छ्यानबै नृप सेना सब जरासंध[59] बँध छोरे।
ऐसैं जन परतिज्ञा[60] राखत जुद्ध प्रगट करि जोरे।।
गुरु बांधव हित मिलै सुदामहिं[61] तंदुल[62] पुनि जाँचत।

भक्तों का उद्धार

---

20. *शरीर* 21. *परिशिष्ट* 22. *परिशिष्ट* 23. *परिशिष्ट* 24. *परिशिष्ट* 25. *परिशिष्ट* 26. *कृष्ण का मामा कंस* 27. *केशी* 28. *दुष्ट* 29. *अद्यासुर* 30. *बकासुर* 31. *वृषभासुर* 32. *पूतना (राक्षसी)* 33. *धेनुकासुर,* 34. *मारकर* 35. *शंखचूड (असुर)* 36. *मुष्टिक (असुर)* 37. *प्रलंब (असुर)* 38. *तृणावर्त (असुर)।* 39. *चाणूर (असुर)* 40. *सर्प (कालिया नामक एक नाग को श्रीकृष्ण ने मारा था)* 41. *तोड़कर* 42. *देवताओं के राजा (इंद्र, देवराज)* 43. *तोड़ा, चूर कर दिया* 44. *बाल,* 45. *राजा द्रुपद (द्रौपदी के पिता),* 46. *बोली,* 47. *वस्त्र,* 48. *आकाश* 49. *मुक्त करने वाले,* 50. *शरण हूँ,* 51. *कठिन समय, आपत्ति काल* 52. *प्रहलाद (हिरण्यकश्यप का पुत्र, महान भक्त)* 53. *निश्चिंत* 54. *लाक्षागृह (पाण्डवों को जलाकर मार डालने के लिए दुर्योधन ने षड्यंत्र करके लाख का घर बनवाया था)* 55. *साग (शाक),* 56. *परिशिष्ट* 57. *शाप,* 58. *पालन किया, पूर्ण किया,* 59. *परिशिष्ट* 60. *प्रतिज्ञा,* 61. *सुदामा को, सुदामा से,* 62. *चावल,*

भगत बिरह कौ अतिहीं कादर[63] असुर गर्व बल नासत।।
संकट हरन चरन हरि प्रगट बेद बिदित जस[64] गावै।
सूरदास ऐसे प्रभु तजि कै घर घर देव मनावै।। 5।।

रे मन आपु[65] कौं पहिचानि।
सब जनम तैं भ्रमत[66] खोयौ अजहुँ[67] तौ कछु जानि।।
ज्यौं मृगा कस्तूरि भूलै सु तौ ताकैं पास।
भ्रमत ही वह दौरि ढूँढै जबहिं पावै बास[70]।। अद्वैत भाव
भरम ही बलवंत सब मैं ईसहू[71] कैं भाइ।
जब भगत भगवंत चीह्नै[72] भरम मन तैं जाइ।।
सलिल[73] कौं सब रंग तजि कै एक रंग मिलाइ।
सूर जो द्वै रंग त्यागे यहै भक्त सुभाइ[74]।। 6।।

अब तुम्ह नाम[75] गहौ मन नागर।
जातैं काल अगिनि[76] तैं बाँचौ सदा रहौ सुख सागर।।
मारि न सकै बिघन नहिं ग्रासै जम न चढ़ावै कागर। हरि की
किया कर्म करतहु निसि बासर[77] भक्ति कौ पंथ उगजार।। श्रेष्ठता
सोचि बिचारि सकल स्रुति[78] सम्मति[79] हरि तैं और न आगर[80]।
सूरदास प्रभु इहिं औसर[81] भजि उतरि चलौ भवसागर।। 7।।

राग सारंग

हमारे निर्धन के धन राम। सगुण भक्ति
चोर न लेत घटत[82] नहिं कबहूँ आवत गाढ़ै काम।। की महता
जल नहिं बूड़त[83] अगिनि न दाहत[84] है ऐसौ हरि नाम।
बैकुँठनाथ[85] सकल सुख दाता सूरदास सुख धाम।। 8।।

---

63. *कातर, दुखी* 64. *ऐसा,* 65. *स्वंय को, अपने को,* 66. *भ्रमित (भ्रम में पड़ा हुआ)* 67. *आज भी* 70. *सुगंध* 71. *ईश्वर को भी* 72. *पहचान लेता है,* 73. *पानी* 74. *स्वभाव* 75. *नाम (भगवान का)* 76. *अग्नि* 77. *दिन* 78. *वेद* 79. *सम्मत* 80. *श्रेष्ठ,* 81. *अवसर, समय,* 82. *कम नहीं होता है,* 83. *डूबता* 84. *दहन करना, जलाना,* 85. *ईश्वर,*

राग सोरठ।

अब कै॑ राखि[86] लेहु भगवान।
हौ॑ अनाथ बैठयौ द्रुम[87] डरिया[88] पारधि[89] साधै बान[90]।।
ताकै॑ डर मै॑ भाज्यौ चाहत ऊपर ढुक्यौ[91] सचान[92]।
दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह कौन उबारै प्रान।।
सुमिरत ही अहि[93] डस्यौ[94]
पारधी कर छुट्यो संधान[95]।
सूरदास सर[96] लग्यौ सचानहि॑ जय जय॑ कृपानिधान।। 9।।

कृपा निधान की महिमा

राग घनाश्री

दीन कौ दयाल सुन्यौ अभय दान दाता।
साँची बिरुदा वलि[97] तुम जग के पितु माता।।
ब्याध गीध गनिका गज़ इनमैं को ज्ञाता।
सुमिरत तुम आए तहँ त्रिभुवन बिख्याता।।
केसि कंस दुष्ट मारि मुष्टिक कियौ घाता।
धाए गजराज काज केतिक यह बाता।।
तीनि लोक बिभव[98] दियौ तंदुल के खाता।
सरबस[99] प्रभु रीझि[100] देत तुलसी कै॑ पाता[101]।।
गौतम[102] की नारि[103] तरी नैकु परसि[104] लाता।
और को हे तारिबे कौ॑ कहौ कृपा ताता।।
माँगत है सूर त्यागि जिहि॑ तन-मन राता[105]।
अपनी प्रभु भक्ति देहु जासौं तुम नाता[106]।। 10।।

भक्तों के कष्ट का निवारण

राग सारंग

प्रभु हौ॑ सब पतितनि[107] कौ टीकौ[108]।
और पतित सब दिवस चारि कै हौ॑ तौ जनमत[109] ही कौ।।
बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना[110] ही कौ॑।

प्रभु की महत्ता

---

86. *शरण* 87. *वृक्ष* 88. *डाल पर* 89. *बहेलिया (शिकारी)* 90. *तीर,* 91. *छिपा है* 92. *बाज पक्षी* 93. *सर्प* 94. *डस लिया* 95. *निशाना* 96. *तीर,* 97. *यश, ख्याति* 98. *वैभव* 99. *सर्वस्व* 100. *रीझकर, खुश होकर* 101. *पत्ते* 102. *गौतम ऋषि* 103. *स्त्री पत्नी (अहिल्या),* 104. *छूकर* 105. *रत है, लगा है,* 106. *रिश्ता,* 107. *पतितों* 108. *सिरमौर (श्रेष्ठ),* 109. *जन्म से ,* 110. *पूतना (राक्षसी), परिशिष्ट*

माहें छाँड़ि तुम और उधारे मिटै सूल[111] क्यौं जी[112] कौं।।
कोउ न समरथ[113] अघ[114] करिबे कौं खैंचि कहत हौं लीकौं[115]।
मरियत लाज सूर पतितनि मैं मोहूँ तैं को नीकौ।। 11।।

राग धनाश्री

अब मैं नाच्यौ[116] बहुत गुपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि[117] चोलना[118] कंठ बिषय[119] की माल।।
महामोह[120] के नूपुर[121] बाजत निंदा सबद रसाल[122]। मोह, माया,
भ्रम भोयौ[123] मन भयौ पखाबज[124] चलत असंगत[125] चाल।। भ्रम से मुक्ति
तृष्ना[126] नाद[127] करति घट[128] भीतर नाना[129] बिधि दै ताल।
माया को कटि[130] फेंटा[131] बाँध्यौ लोभ तिलक दियौ भाल[132]।।
कोटिक कला काछि[133] दिखराई जल थल सुधि[134] नहिं काल।
सूरदास की सबै अबिद्या[135] दूरि करौ नँदलाल।। 12।।

राग कल्यान

जैसें राखहु तैसैं रहौं।
जानत हौ दुख सुख सब जन के मुख करि कहा कहौं।।
कबहुँक[136] भोजन लहौं कृपानिधि कबहुँक भूख सहौं। आराध्य के
कबहुँक चढ़ौं तुरंग[137] महागज[138] कबहुँक भार बहौ[139]। चरण में भग्न
कमल नयन घन स्याम मनोहर अनुचर[140] भयौ रहौं। से मुक्ति
सूरदार प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हारे चरन गहौं।। 13 ।।

राग देवगंधार

मेरो मन अनंत[141] कहाँ सुख पावै। सगुणोपासना
जैसैं उड़ि[142] जहाज कौ पच्छी[143] फिरि जहाज पर आवै।। की महत्ता

---

111. *कसक, शूल* 112. *हृदय का,* 113. *समर्थ* 114. *पाप,* 115. *दृढ़ता के साथ* 116. *नाच चुका,* 117. *पहनकर* 118. *चोला, वस्त्र* 119. *इंद्रिय सुख* 120. *महामोह* 121. *पायल* 122. *रसयुक्त,* 123. *भ्रमित भूला हुआ* 124. *मृदंग(बाजा),* 125. *उलटा* 126. *तृष्णा (प्यास)* 127. *आवाज, ध्वनि* 128. *हृदय में,* 129. *अनेक* 130. *कमर* 131. *फेंटा* 132. *माथे पर (मस्तक)* 133. *बन संवरकर* 134. *स्मरण* 135. *अज्ञान,* 136. *कभी-कभार* 137. *घोड़ा* 138. *हाथी (मतवाला)* 139. *ढोता हूँ,* 140. *सेवक* 141. *अन्यत्र (और कहाँ),* 142. *उड़कर* 143. *पक्षी*

कमल नैन कौ छाँड़ि महातम[144], और देव कौं ध्यावै[145]।
परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ[146] दुरमति[147] कूप[148] खनावै[149]।।
जिहिं मधुकर[150] अंबुज[151] रस चाख्यौ क्यौं करील[152] फल खावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु[153] तजि छेरी[154] कौन दुहावै।। 14।।

राग खंबावती तिताला।

हमारे प्रभु औगुन[155] चित[156] न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ सोई पार करौ।
इक लोहा पूजा मैं राखत इक घर बधिक परौ।
सो दुविधा[157] पारस[158] नहिं जानत कंचन[159] करत खरौ[160]।। आराध्य समदर्शी है
इक नदिया इक नार[161] कहावत मैलौ नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन[162] ह्वै गंगा[163] नाम परौ।।
तन माया ज्यौं ब्रह्म कहावत सूर सु मिलि बिगरौ[164]।
कै इनकौ निरधार[165] कीजिये कै प्रन जात टरौ[166]।। 15 ।।

---

144. *माहात्म्य, महत्व* 145. *ध्यान करना* 146. *प्यासा* 147. *दुर्बुद्धि* 148. *कुँआ* 149. *खुदवाए* 150. *भौंरा* 151. *कमल* 152. *करील* 153. *कामधेनु (मनोवांछा पूर्ण करने वाली गाय)* 154. *बकरी,* 155. *अवगुण* 155. *ध्यान* 156. *समदर्शी* 157. *भेद* 158. *पारस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है,* 159. *सोना* 160. *शुद्ध* 161. *नाला,* 162. *रंग,* 163. *गंगा, (देवनदी)* 164. *बिगड़ गया है,* 165. *पृथक (अलग)* 166. *टला (दूर हुआ),*

12. व्याध-यदुवंश के विनाश के बाद एक बार कृष्ण सघन वन में एक पेड़ के नीचे पैर पर पैर रखे अध-लेटे बैठे हुए थे। उनके पैर में बने पद्म-चिन्ह को हिरण की आँख समझकर एक व्याध ने उसमें निशाना लगा दिया। कृष्ण ने उसे सशरीर स्वर्ग भेज दिया और स्वयं भी वैकुण्ठ चले गए।

13. अजामिल- जन्मना ब्राह्मण था, लेकिन कर्म से पतित था। उसके पुत्र का नाम नारायण था। मृत्यु के समय यम के दूत उसे यंत्रणा दे रहे थे तो उसने अपने बेटे का नाम लेकर पुकारा। नारायण की पुकार सुनकर भगवान के दूत वहाँ पहुँच गए और उसे भगवान के पास ले आएं। भगवान ने उसे मोक्ष प्रदान किया।

15. विदुर- दासी-पुत्र और कौरवों के आश्रित थे, लेकिन मन से पाण्डवों का पक्ष लेते थे। इन्हें परम नीतिज्ञ माना जाता है। प्रसिद्ध विदुर नीति ग्रंथ इन्हीं का लिखा माना जाता है।

21. नृग- राजा था और महान दानी के रूप में ख्याति थी। वह प्रतिदिन एक करोड़ गाय ब्राह्मणों को दान करता था। एक बार दान में दी गई एक गाय किसी तरह से पुनः उसकी गायों में शामिल हो गई थी, जिसे उसने दूसरे ब्राह्मण को दान कर दिया था। पहले ब्राह्मण ने अपनी गाय पहचान ली और दूसरे ब्राह्मण से झगड़ा करने लगा। वे दोनों ब्राह्मण राजा नृग में पास पहुँचे और झगड़े का कारण बताया। राजा के क्षमा माँगने पर भी उन्होंने उसे गिरगिट होने का शाप दिया। राजा एक हजार वर्षों तक द्वारकापुरी के पास के एक कुएं में पड़ा रहा। उसे श्रीकृष्ण ने मोक्ष दिया।

22. कपि वानर- (सुग्रीव के भाई बालि को राम ने मारकर उसे मोक्ष दिया था)

23. गीध (जटायु) -सीता को हरकर ले जाते हुए रावण से युद्ध किया था, जिसमें वह बुरी तरह घायल हुआ था। बाद में उसने राम को सारा किस्सा सुनाया और अपना प्राण त्याग दिया।

24. गनिका- वेश्या। भगवान का भजन करके मोक्ष प्राप्त किया।

25. गजराज- हाथियों का राजा, उसे अपने बल पर बड़ा घमण्ड था। एक बार पानी पीते हुए उसे एक मगरमच्छ ने पकड़ लिया था। बहुत कोशिशों के बाद भी वह मुक्त न हो पाया तब उसने भगवान को स्मरण किया। उसकी पुकार सुनकर भगवान विष्णु भागे आये और सुदर्शन चक्र से मगर को मारकर गजराज का उद्धार किया।

56. अंबरीष- राजा और परम विष्णु भक्त था। दुर्वासा ऋषि ने उससे नाराज होकर उसे शाप दिया था। बाद में भगवान विष्णु ने उसकी मदद की थी।

59. जरासंध- एक अन्यायी राजा था। कृष्ण ने उसे मल्ल युद्ध में भीम के द्वारा मरवाया था।

110 पूतना- पूर्वजन्म में अप्सरा थी। बाद में किसी शाप के परिणाम स्वरूप उसने पूतना नाम की राक्षसी के रूप में जन्म लिया। कंस ने बालक कृष्ण को मारने के लिए उसे भेजा था। उसने अपने स्तनों पर विष का लेप किया और कृष्ण को दूध पिलाने लगी। कृष्ण ने दूध पीते-पीते उसके प्राण हर लिए। इस तरह उसकी मुक्ति हुई।

वात्सल्य

सूरदास ने अपने आराध्य कृष्ण की लीलाओं को काव्य का आधार बनाया है। 'वात्सल्य' के पद कृष्ण की बाल-क्रीड़ाओं के सुंदर चित्र हैं। कृष्ण की बाल- क्रीड़ाओं को इतने सजीव और मार्मिक रूप में अभिव्यक्ति मिली है कि सहृय निस्संकोच भाव से सूर को दाद देते नहीं थकते हैं।

वात्सल्य वर्णन में सूर ने बाल-मनोविज्ञान पर अपने असाधारण अधिकार का परिचय दिया है। बालकों की एक-एक चेष्टा, छोटे से छोटा भाव, अनुभाव सूर की दृष्टि से ओझल नहीं होता है।

प्रथम पद में - यशोदा कृष्ण को पालने में झुला रही हैं और साथ ही कुछ गाती भी जाती हैं। यह सारा उपक्रम वे अपने लाल को अच्छी सी नींद आ जाए, इसीलिए कर रही हैं। कृष्ण को नींद नहीं आती हैं, इसीलिए माता यशोदा नींद को ही उलाहना दे रही हैं। कृष्ण कभी सो जाते हैं, कभी जाग जाते हैं, यह क्रम चलता रहता है। छोटे बच्चों की नींद ऐसी ही होती है। सूर ने इसे बारीकी से पकड़ा है।

पद संख्या 5 में सूर ने कृष्ण के घुटनों के बल चलने का दृश्य उपस्थित किया है। कृष्ण मुख में दही लपेटे हुए घुटनों के बल चल रहे हैं। उनके गाल सुंदर हैं, आँखें बड़ी-बड़ी हैं, माथे पर गोरोचन का तिलक है। वे आभूषणों से भी सजे हुए हैं। सूर इस अद्‌भुत दृश्य का एक पल अनुभव करके धन्य-धन्य हो जाते हैं। वे इसे सैकड़ों कल्पों के जीवन से ऊपर मानते हैं।

पद संख्या 6 में सूर ने कृष्ण के मक्खन खाने का चर्चा की है। वे खीझते हुए मक्खन खा रहे हैं। उनकी आँखें लाल हैं, भौहें टेढ़ी हैं और उन्हें बार-बार जंभाई आ रही है। वे घुटनों के बल चल रहे हैं। और उनका पूरा शरीर धूल से सना हुआ है। कभी वे तुतलाते हैं तो कभी 'तात' को पुकारते हैं। ध्यान दीजिए कि, सूर ने एक छोटे बच्चे की हरकतों का कितना सटीक और जीवंत चित्र उपस्थित किया है। छोटा बच्चा अपने कार्य-कलापों में नितांत प्राकृतिक (स्वाभाविक) होता है। वह अत्यंत स्वाभाविक तरीके से वही करता है जो उसका मन करता है। सूर के कृष्ण में ये सारी बातें हैं। पद संख्या 9 में सूर ने माता यशोदा के बालक कृष्ण को चलना सिखाने का चित्र खींचा है। कृष्ण चलना सीख रहे हैं। माता यशोदा सहारे के लिए उन्हें अपना हाथ पकड़ाती हैं, कृष्ण डगमगाते हुए जमीन पर अपना पैर रखते हैं। माता यशोदा कभी कृष्ण का सुंदर मुख देखकर आनंदित होती हैं, उनकी बलाइयां लेती है तो कभी अपने प्रिय के कुशल-क्षेम के लिए कुलदेवता को याद करती हैं। कभी बलराम को साथ खेलने के लिए पुकारती हैं। ये सारी चेष्टाएं एक माँ की अपने बच्चे के प्रति सुरक्षा की भावनाएं हैं। सूर ने इन सबको अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया है। पद संख्या 11 में सूर ने बालक कृष्ण के एक और बाल-सुलभ जिज्ञासा

को पेश किया है। बालक कृष्ण माता यशोदा से यह प्रश्न करते हैं कि, हे माँ, मेरी चोटी कब बढ़गा? तुम तो कहती हो कि, जल्दी ही बलराम भइया की चोटी जैसी लंबी और मोटी हो जाएगी, परंतु अब तक तो ऐसा हुआ नहीं। पद संख्या 13 में सूर ने एक और बाल-चेष्टा का मनोरम दृश्य उपस्थित किया है। बालक कृष्ण अपनी माँ से 'चंद्रखिलौना' लेने की जिद कर रहे हैं। खिलौना नहीं मिलने पर वे स्पष्ट धमकी देते हैं कि, वे तत्काल धरती पर लोटेंगे और अपनी माँ की गोद में नहीं आएंगे। खाना-पीना भी छोड़ देंगे। माता यशोदा हंस कर उन्हें समझाने की चेष्टा करती हैं। इसी क्रम में वे उन्हें नई दुल्हन ला देने का प्रलोभन देती हैं, लेकिन तुंरत ब्याह के लिए जाने की तत्परता दिखाते हैं। एक छोटा बच्चा संभव, असंभव से परे होता है। वह अपनी जिद के साथ कुछ भी मांग रख सकता है। इसी भाव को सूर ने इस पद में मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। पद संख्या 14 में सूर ने बालक कृष्ण के बलराम व उनके मित्रों के साथ खेलने और नाराजगी का चित्र खींचा है। पद संख्या 16 में सूर ने कृष्ण का बलदाऊ के चिढ़ाने से नाराज होकर माता यशोदा से शिकायत करने का भाव व्यक्त किया है। बलराम कृष्ण को चिढ़ाते हैं। उनसे कहते हैं कि, तुम यशोदा द्वारा खरीदे गए हो, उनके बेटे नहीं हो। यशोदा और नंद गौरवर्णी हैं और तुम काले हो। माँ-बाप के शरीर का रंग, बच्चों पर भी जाता ही है। यह तथ्य भी तुम्हारे खिलाफ है। इस तरह से बलराम कृष्ण को तंग करते हैं। कृष्ण इन आरोपों को गंभीरता से लेते हैं, परेशान होते हैं और कोई रास्ता न देख सीधे माता यशोदा से सहायता मांगते हैं। पद संख्या 17 में सूर ने बालक कृष्ण की खेलने की उत्कट इच्छा का चित्र उपस्थित किया है। कृष्ण के साथी-संगी उनके खेल में हारने व नाराज होने पर कहते हैं कि तुम्हारे साथ हम नहीं खेलेंगे। लेकिन कृष्ण खेलना चाहते हैं इसलिए वे नंद बाबा की दुहाई देकर दांव लगाते हैं। अंतिम और बीसवें पद में सूरदास ने कृष्ण के मक्खन चुराने व चोरी करते हुए पकड़े जाने पर अपनी माँ यशोदा को पट्टी पढ़ाने के दृश्यों को अच्छी तरह से वाणी दी है।

वात्सल्य

राग घनाश्री

जसोदा[1] हरि पालनैं झुलावैं।
हलरावै[2] दुलराइ[3] मल्हावै[4] जोइ सोइ कछु गावै।। कृष्ण को पालने में झुलाती यशोदा
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया[5] काहे न आनि सुबावै[6]।
तु काहै नहिं वेगहिं[7] आवै तोकौ कान्ह[8] बुलावै।।
कबहुँ पलक[9] हरि मूँदि[10] लेत हैं कबहुँ अधर[11] फरकावै[12]।
सोवत जानि मौन[13] ह्वै कै रहि करि करि सैन[14] बतावै।।
इहिं अंतर[15] अकुलाइ[16] उठे हरि जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ[17] सो नँद भामिनि[18] पावै।।1।।

राग बिहागरौ।

जसुदा मदन गुपाल सोवावै।
देखि सयन[19] गति त्रिभुवन[20] कंपै[21] ईस[22] बिरंचि[23] भ्रमावै। बाल कृष्ण का सौंदर्य
असित[24] अरून[25] सित[26] आलस[27] लोचन उभय[28] पलक परिआवै।
जनु रवि गत संकुचित कमल जुग[29] निसि अलि[30] उड़न न पावै।।
स्वास उदर[31] उरसति[32] यौं मानौ दुग्ध सिंधु छबि पावै। नाभि[33]
सरोज[34] प्रगट पदमासन[35] उतरि नाल[36] पछितावै[37]।।
कर सिर तर करि स्याम मनोहर अलक[38] अधिक सोभावै[39]।
सूरदास मानौ पन्नगपति[40] प्रभु ऊपर फन[41] छावै।।2।।

राग रामकली।

महरि[42] मुदित उलटाइ कै मुख चूमन[43] लागी।
चिरजीवौ[44] मेरौ लाड़िलौ[45] मैं भई सभागी[46]। वात्सल्य
एक पाख[47] त्रय मास कौ मेरौ भयौ कन्हाई।

---

1. *यशोदा* 2. *हिलाती डुलाती है* 3. *दुलार करती है,* 4. *चुंबन लेती है* 5. *नींद* 6. *सुलाती* 7. *शीघ्र ही* 8. *कृष्ण* 9. *पलक* 10. *बंद कर लेते हैं* 11. *होठ* 12. *फड़काने लगते हैं* 13. *चुप हो जाती है* 14. *संकेत* 15. *(इसी) बीच* 16. *आतुरतापूर्वक,* 17. *दुर्लभ* 18. *पत्नी* 19. *शयन* 20. *त्रिलोक,* 21. *काँपता है* 22. *शंकर* 23. *ब्रह्मा* 24. *काले,* 25. *लाल* 26. *उज्जवल* 27. *अलसाये हुए* 28. *दोनों* 29. *युगल, जोड़ा* 30. *भौंरा* 31. *पेट* 32. *ऊपर नीचे होता है,* 33. *नाभि* 34. *कमल* 35. *ब्रह्मा (कमल के आसन पर बिराजने वाले)* 36. *नाल* 37. *पश्चाताप करते हैं* 38. *लटों (बाल की),* 39. *शोभा,* 40. *सर्पराज,* 41. *फनों की,* 42. *यशोदा (ब्रजरानी),* 43. *चूमने* 44. *दीर्घजीवी हो* 45. *लाडला, प्यारा* 46. *सौभाग्यवती* 47. *पक्ष (14 दिनों का एक पक्ष होता है)*

पटकि रान उलटौ परयौ मैं करौ बधाई।।
नंद घरनि[48] आनंद भरी बोलब्रजनारी।
यह सुख सुनि आई सबै सूरज बलिहारी।।3।।

राग रामकली।

जननी देखि छबि बलि जाति।
जैसैं निधनी[49] धनहिं पाऐं हरष[50] दिन अरु राति।। बाल लीला
बाल लीला निरखि हरषित धन्य धनि ब्रज नारि।
निरखि[51] जननी बदन[52] किलकत[53] त्रिदसपति[54] दे तारि[55]।।
धन्य नंद धनि धन्य गोपी धन्य ब्रज कौ बास।
धन्य धरनी करन पावन जन्म सूरजदास ।। 4।।

राग बिलावलं

सोभित कर[56] नवनीत[57] लिए।
घुटुरूनि[58] चलन रेनु[59] तन मंडित[60] मुख दधि[61] लेप[62] किए।।
चारु[63] कपोल[64] लोल[65] लोचन गोरोचन[66] तिलक दिए। बाल लीला
लट लटकनि मनु मत्त[67] मधुप[68] गन मादक मधुहिं पिए।।
कठुला[69] कंठ बज्र[70] केहरि[71] नख[72] राजत रूचिर[73] हिए[74]।
धन्य सूर एको पल इहिं सुख का सत[75] कल्प[76] जिए।।5।।

राग रामकली।

खीझत[77] जात माखन खात।
अरुन लोचन भौंह[78] टेढ़ी बार बार जँभात[79]।। बाल क्रीड़ा
कबहुँ रूनझुन[80] चलत घुटुरूनि धुरि[81] धूसर[82] गात[83]।
कबहुँ झुकि कै अलक खैंचत नैन जल भरि जात।।
कबहुँ तोतर[84] बोल बोलत कबहुँ बोलत तात।
सूर हरि की निरखि सोभा निमिष[85] तजत न मात।।6।।

---

48. *घरवाली* 49. *निर्धन*, 50. *हर्षित* 51. *देखकर* 52. *मुख*, 53. *किलकारी मारते हैं*, 54. *देवपति* 55. *ताली*, 56. *हाथ*, 57. *ताजा मक्खन* 58. *घुटनों के बलए* 59. *धूल*, 60. *सने हुए (धूसरित)* 61. *दही*, 62. *लपटाए हुए* 63. *सुंदर* 64. *गोल*, 65. *चंचल* 66. *गोरोचन*, 67. *मतवाला* 68. *भौंरा* 69. *कठुला* 70. *हीरा*, 71. *बाघ* 72. *नाखून* 73. *सुंदर* 74. *वक्ष-स्थल* 75. *सौ* 76. *युग* 77. *खीझते हैं* 78. *भौंहे* 79. *जम्हाई लेते हैं* 80. *रूनझुन (ध्वनि)* 81. *धूल में* 82. *सने हुए* 83. *शरीर* 84. *तुतलाकर (अस्पष्ट उच्चारण)* 85. *पल भर भी,*

राग नटनारायन।

हरि जू की बाल छबि कहौं बरनि[86]।
सकल सुख की सींव[87] कोटि मनोज[88] सोभा हरनि।।
भुज[89] भुजंग[90] सरोज नैननि बदन बिधु[91] जित[92] लरनि[93]।
रहे बिबरनि[94] सलिल[95] नभ उपमा[96] अपर[97] दुरि[98] डरनि[99]।।
मंजुल[100] मेचक[101] मृदुल[102] तनु अनुहरत[103] भूषन[104] भरनि[105]।
मनहुँ सुभग सिंगार सिसु तरु फरयौ अद्भुत फरनि।।
चलत पद प्रतिबिंब[106] मनि आगन घुटुरूवनि करनि।
जलज[107] संपुट[108] सुभग छबि भरि लेति उर जनु धरनि।।
पुन्य फल अनुभवति[109] सुतहि बिलोकि कै नँद धरनि।
सूर प्रभु की उर बसी किलकनि ललित[110] लरखनि[111]।।7।।

बाल क्रीड़ा

राग घनाश्री।

किलकत[112] कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन बिंब पकरिबैं धावत।।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह[113] कौं कर सौं पकरन[114] चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दँतियाँ[115] पुनि पुनि तिहिं अवगाहत[116]।।
कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा इक राजति।
करि करि प्रतिपद[117] प्रति मनि[118] बसुधा[119] कमल बैठकी साजति।।
बाल दसा सुख निरखि जसोदा पुनि पुनि नंद बुलावति।
अँचरा[120] तर[121] लै ढाँकि[122] सूर के प्रभु कौं दूध पियावति।।8।।

बाल वर्णन

राग बिलावल।

सिखवति[123] चलन जसोदा मैया।
अरबराइ[124] कर पानि गहावत[125] डगमगाइ[126] धरनी[127] धरे पैया[128]।।

यशोदा कृष्ण को चलना सिखा रही हैं

---

86. *वर्णन करता हूँ,* 87. *सीमा,* 88. *कामदेव,* 89. *भुजाएं* 90. *सर्प* 91. *चंद्रमा* 92. *जीत लेता है,* 93. *होड़, लड़ाई,* 94. *विवर्ण* 95. *जल,* 96. *उपमा, सादृश्य* 97. *दूसरी,* 98. *छिप गई हैं,* 99. *डरकर* 100. *सुंदर* 101. *श्याम,* 102. *कोमल* 103. *मोदित करना* 104. *आभूषण* 105. *भरा हुआ,* 106. *प्रतिच्छाया* 107. *कमल* 108. *संपुट* 109. *अनुभव करती है* 110. *सुंदर* 111. *लड़खड़ाकर चलना,* 112. *किलकारी मारते हुए,* 113. *छाया,* 114. *पकड़ना* 115. *दाँत,* 116. *पकड़ना चाहते हैं (प्रतिबिंब को)* 117. *प्रत्येक पद (कदम पर),* 118. *प्रत्येक मणि* 119. *पृथ्वी* 120. *आँचल* 121. *के नीचे, तले* 122. *ढंककर* 123. *सिखा रही हैं,* 124. *हड़बड़ाकर,* 125. *पकड़ा देते है,* 126. *डगमगाते हुए,* 127. *पृथ्वी पर, जमीन पर,* 128. *पांव*

कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति उर आनंद भरि लेति बलैया[129]।
कबहुँक कुल देवता मनावति[130] चिरजीवहु[131] मेरौ कुँवर कन्हैया।।
कबहुँक बल[132] कौं टेरि[133] बुलावति इहिं आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला अति प्रताप बिलसत[134] नँदरैया[135]।। 9।।

राग बिलावल।

नंद जू के बारे[136] कान्ह छाँड़ि दै मथनियाँ[137] बार बार कहति मातु जसुमति नँदरनियाँ।।
नैकु रहो माखन देउँ मेरे प्रान धनियाँ। बाल चेष्टा
आरि[138] जनि करौ बलि बलि जाउँ हौं निधनियाँ[139]।।
जाकौ ध्यान धरैं सबै सुर नर मुनि जनियाँ।
ताकौ नँदरानी मुख चूमै लिए कनियाँ[140]।
सेष[141] सहस[142] आनन[143] गुन गावत नहिं बनियाँ[144]।
सूर स्याम देखि सबै भूलीं गोप धनियाँ।। 10।।

राग रामकली।

मैया कबहिं बढैगी चोटी। बाल सुलभ जिज्ञासा
किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं है है लाँबी[145] मोटी।
काढ़त[146] गुहत[147] न्हवावत[148] ओछत[149] नागिनि सी भुई[150] लोटी[151]।। बाल हठ
काँचौ[152] दूध पियावत पचि पचि[153] देति न माखन रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया हरि हलधर की जोटी[154]।। 11।।

---

129. *बलैया* 130. *मनाती है,* 131. *चिरंजीवी हो,* 132. *बलराम,* 133. *कहती हैं (बुलाकर)* 134. *क्रीड़ा कर रहे हैं,* 135. *नंदरायए* 136. *लड़ैते (लड़के, दुलारे),* 137. *मथानी* 138. *हठ,* 139. *कंगालिन, निर्धन स्त्री,* 140. *गोद में,* 141. *शेषनाग* 142. *हजार,* 143. *मुख,* 144. *बनता है।* 145. *लंबी,* 146. *कंघी करते,* 147. *गूंथते हुए* 148. *स्नान करते हुए* 149. *पोंछते हुए* 150. *जमीन तक, भूमि तक,* 151. *लटकने लगेगी,* 152. *कच्चा* 153. *बार-बार* 154. *जोड़ी,*

राग कान्हरौ।

किहिँ बिधि करि कान्हहिँ समुझैहौँ।
मैँ ही भूलि चंद दिखरायौ[155] ताहि कहत मैँ[156] खैहौँ।।
अनहोनी[157] कहुँ भई कन्हैया देखी सुनी न बात। — बाल चेष्टा
यह तौ आहि[158] खिलौना सबको खान[159] कहत तिहिँ तात।।
यहै देत लवनी[160] नित मोकौँ छिन[161] छिन साँझ[162] सवारे[163]।
बार बार तुम माखन माँगत देउँ कहाँ तैँ प्यारे।।
देखत रहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई।
सूर स्याम लिए हँसति जसोदा नंदहिँ कहति बुझाई।। 12 ।।

राग केदारौ।

मैया[164] मैँ तौ चंद खिलौना लैहौँ।
जैहौँ लोटि[165] धरनि पर अबही तेरी गोद न ऐहौँ।।
सुरभी[166] और पय[167] पान न करिहौँ बेनी[168] सिर न गुहैहौ ।
ह्वै हौँ पूत नंद बाबा को तेरौ सुत न कहैको।। — बाल हठ
आगैँ आउ बात सुनि मेरी बलदेवहि न जनैहौँ।
हँसि समुझावति कहति जसोमति नई दुल हनिया दैहौ।।
तेरी सौ[169] मेरी सुनि मैया अबहिँ बियाहन[170] जैहौँ।
सूरदास है कुटिल[171] बराती[172] गीत सुमंगल[173] गैहौ ।।13।।

राग रामकली।

खेलत स्याम ग्वालनि संग।
सुबल हलधर अरू श्रीदामा करत नाना रंग।। — बाल क्रीड़ा
हाथ तारी देत भाजत सबै करि करि होड़[174]।
बरजै[175] हलधर स्याम तुम जनि चोट लागै गोड़[176]।। — कृष्ण की शिकायत
तब कह्यौ मैँ दौरि जानत बहुत बल मो गात।
मेरी जोरी[177] है श्रीदामा हाथ मारे जात।।
उठे बोलि तबै श्रीदामा चाहु तारी[178] मारि।
आगै हरि पाछै श्रीदामा धरयौ स्याम हँकारि[179]।।

---

155. *दिखाया,* 156. *खाऊंगा,* 157. *असंभव,* 158. *है* 159. *खाने को,* 160. *मक्खन* 161. *क्षण,* 161. *शाम,* 163. *सुबह,* 164. *माँ,* 165. *लोट (जाऊंगा), सो (जाऊंगा)* 166. *गाय,* 167. *दूध,* 168. *वेणी, चोटी,* 169. *शपथ, सौंगध,* 170. *विवाह के लिए,* 171. *कुटिल,* 172. *बराती* 173. *सुंदर गीत, मंगलगीत,* 174. *स्पर्धापूर्वक* 175 *बरजते हैं, मना करते हैं,* 176. *पैर,* 177. *जोड़ीदार,* 178. *ताली,* 179. *हुँकारते हुए*

जानिकै मैं रह्यौ ठाढ़ी छुवत[180] कहा जु मोहि।
सूर हरि खीझत सखा सौं मनहि कीन्हौ कोह[181]।। 14।।

राग गौरी।

सखा कहत है स्याम खिसाने[182]।
आपुहि आपु बलकि[183] भए ठाढ़े अब तुम कहा रिसान[184]।।
बीचहि बोलि उठे हलधर तब याक[185] माइ न बाप। खेल खेल में नाराजगी
हारि जीत कछु नैकु न समुझत लरिकनि लावत पाप।।
आपुन हारि सखनि सौं झगरत[186] यह कहि दियौ पठाइ[187] सूर स्याम
उठि चले रोइ कै जननी पूछति धाइ।।15।।

राग गौरी।

मैया मोहि दाऊ[188] बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ तू जसुमति कब जायौ।। कृष्ण द्वारा बलराम की शिकायत
कहा करौं इहि रिस[189] के मारे खेलन हौ नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरौ तात।।
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल[190] गात।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हँसत सबै मुसुकात।।
तू मोही कौं मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई[191] जनमत ही कौ धूत[192]।
सूर स्याम मोहि गोधन[193] की सौ हौ माता तू पूत।।16 ।।

---

180. *छूना,* 181. *क्रोध* 182. *खिसिया (खीझ), गए हैं,* 183. *अकड़कर,* 184. *नाराज,* 185. *इसके,* 186. *झगड़ता है,* 187. *(घर) भेज दिया,* 188. *बलदाऊ, बलराम (श्री कृष्ण के बड़े भाई),* 189. *क्रोध,* 190. *सांवला* 191. *चुगलखोर,* 192. *धूर्त, चालाक (झूठा)* 193. *गोधन,*

राग सारंग।

खेलत मैं को काकौ गुसैयाँ[194]।
हरि हारे जीते श्रीदामा बर बस ही[195] कत करत रिसैयाँ।।
जाति पाँति हमते[196] बड़[197] नाही नाही बसत तुम्हारी छैयाँ[198]।
अति अधिकार जनावत यातैं जातैं अधिक तुम्हारैं गैयाँ।।
रूहठि[199] करै तासौं को खेलै रहे बैठि जहँ तहँ सब ग्वैयाँ[200]।
सूरदास प्रभु खेल्यइ चाहत दाउँ दियौ करि नंद दुहैयाँ[201]।। 17।।

बालक कृष्ण के खेलने की उत्कट इच्छा
कृष्ण द्वारा बहाना बनाना

राग गौरी।

सखा[202] सहित[203] गए माखन चोरी।
देख्यौ स्याम गवाच्छ[204] पंथ है मथति[205] एक दधि भोरी[206]।।
हेरि मथानी धरी माट[207] तैं माखन हो उतरात[208]।
आपुन गई कमोरी[209] माँगन हरि पाई ह्याँ घात[210]।।
पैठे[211] सखनि सहित घर सूनै दधि माखन सब खाए।
छूछी[212] छाँडि मटुकिया[213] दधि की हँसि सब बाहिर आए।।
आइ गई कर लिए कमोरी घर तैं निकसे ग्वाल।
माखन कर दधि मुख लपटानौ[214] देखि रही नँदलाल।।
कहँ आए ब्रज बालक संग लै माखन मुख लपटान्यौ।
खेलत तै उठि भज्यौ[215] सखा यह इहिं घर आइ छपान्यौ[216]।।
भुज[217] गहि लियौ कान्ह एक बालक निकसे ब्रज की खोरि[218]।
सूरदास ठगि[219] रही ग्वालिनी[220] मन हरि लियौ अँजोरि[221]।। 18।।

मक्खन चोरी का दृश्य

---

194. *मालिक* 195. *बलपूर्वक* 196. *हमसे (हम लोगों से)* 197. *बड़े* 198. *छाँव, आश्रय,* 199. *शेष* 200. *साथी मित्र* 201. *दुहाई (देकर),* 202. *मित्रों (के साथ),* 203. *साथ लेकर* 204. *गवाक्ष (खिड़की)* 205. *मथ रही थी* 206. *भोली,* 207. *मटके से,* 208. *ऊपर आया हुआ (ऊपर तैरता हुआ)* 209. *मटकी,* 210. *अवसर, मौका* 211. *घुस गए* 212. *खाली,* 213. *मटकी* 214. *लगाकर, लपेटकर लपटाए* 215. *भागा था,* 216. *छिप गया था* 217. *हाथ, भुजा* 218. *गलियों से* 219. *ठगी रह गई (मुग्ध),* 220. *ग्वालिनी,* 221. *दिन में ही (दिन दहाड़े)*

राग बिलावल।

ग्वालिनी उरहन[222] कैं मिस[223] आई।
नंद नँदन तन मन हरि लीन्हौ बिनु देखे देखे छिन रह्यौ न जाई।।
सुनहु महरि अपने सुत के गुन कहा कहौ किहि भाँति बनाई। चोली फारि[224] हार[225] गहि तोरयौ इन बातनि कहौ कौन बड़ाई[226]।। गोपियों द्वारा कृष्ण की शिकायत
माखन खाइ खवायौ[227] ग्वालनि जो उबरयौ[228] सो दियौ लुढ़ाई[229]।
सुनहु सूर चोरी सहि[230] लीन्ही अब कैसे सहि जाति ढिठाई[231]।। 19।।

राग रामकली।

मैया मै नहि माखन खायौ।
ख्याल[232] परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायौ।।
देखि तुही सींके[233] पर भाजन[234] ऊँचै धरि लटकायौ।
तुही निरखि नान्हे[235] कर अपनैं मैं कैसैं करि पायौ।। कृष्ण द्वारा बहाना बनाना
मुख दधि पोंछि[236] बुद्धि इक कीन्ही दोना[237] पीठि दुरायौ[238]। डारि
साँटि[239] मुसुकाइ जसोदा स्यामहिं कंठ[240] लगायौ।।
बाल बिनोद[241] मोद[242] मन मोह्यौ[243] भक्ति प्रताप दिखायौ। सूरदास
जसुमति कौ यह सूख सिब बिरंचि नहिं पायौ।। 20।।

---

222. *उलाहना (उपालंभ)*, 223. *बहाने*, 224. *फाड़ना* 225. *माला (गले की)*, 226. *बड़ाई (अच्छाई)*, 227. *खिलाया*, 228. *उबरा, बचा हुआ (शेष)*, 229. *गिरा दिया, लुढ़का दिया*, 230. *सहन किया, बर्दाश्त किया*, 231. *ढीठपना (सीनाजोरी)*, 232. *हँसी*, 233. *छींके (पर)*, 234. *बर्तन* 235. *छोटे, नन्हें*, 236. *पोंछकर (पोंछ डाला)*, 237. *दोना (दही का)*, 238. *छिपा दिया* 239. *छड़ी*, 240. *गले से*, 241. *क्रीड़ा*, 242. *आनंद* 243. *मोह लिया*,

भ्रमरगीत

'भ्रमरगीत' सूरदास के 'सूरसागर' का ही हिस्सा है। सूरसागर की रचना का आधार श्रीमद्भागवत की कथा है। उद्धव कृष्ण के परम मित्र हैं। उन्हें कृष्ण ने उपदेश देने के लिए ब्रज भेजा है। उनका ब्रज में बतौर कृष्ण के मित्र, खूब आदर-सत्कार हुआ। यह कथा श्रीमद्भागवत में है, लेकिन गोपियों का ज्ञान और योग का विरोध उसमें नहीं है। यह सूरदास की मौलिक योजना है और ऐसा वे जान बूझकर करते हैं। उन्हें निर्गुण भक्ति के ऊपर सगुण भक्ति की श्रेष्ठता साबित करना था। इसलिए वे बार-बार गोपियों द्वारा ज्ञान और योग के विपक्ष में ढेर सारे अकाट्य तर्क करवाते हैं। आपके संकलन में 'भ्रमरगीत' से संबधित 26 पद रखे गये हैं। इन थोड़े से पदों को पढ़कर आप सूरदास की दृष्टि और उनके अभिव्यक्ति-कौशल का सम्यक् परिचय प्राप्त कर सकेंगे। यहाँ संक्षेप में भ्रमरगीत के कुछ पदों के संबंध में आवश्यक संकेत दिए जा रहे हैं। इनसे आपको अध्ययन में सुविधा मिलेगी।

पद संख्या 1 में सूर ने स्पष्ट किया है कि, कृष्ण मथुरा में हैं और उन्हें माता यशोदा, नंद बाबा, गायों, ब्रजवासियों की बहुत याद आती है। वे राहगीर से माता यशोदा के लिए संदेश भेजते हैं और जल्दी वापस (ब्रज) आने का वादा भी करते हैं। साथ ही माता यशोदा के स्वंय के लिए कृष्ण की धाय (सेविका) कहे जाने का विरोध भी करते हैं। दूसरा पद भी कृष्ण का माता यशोदा को आश्वासन है। कृष्ण को दुख है कि, नंद बाबा ने उन्हें और बलराम को मथुरा भेजकर अपना जी कड़ा कर लिया है। इसीलिए उन्होंने एक बार भेजकर दुबारा कुशल क्षेम जानने की भी कोशिश नहीं की। पद संख्या 3 में सूर ने उद्धव के ब्रज पहुँचने और गोपियों से मिलने और उनके द्वारा खरी-खोटी सुनाए जाने का वर्णन किया है। गोपियाँ उद्धव को ज्ञान योग का व्यापारी घोषित करते हुए उनका जबरदस्त प्रतिरोध करती हैं। उन्हें सही जगह अपना माल बेचने की राय देती हैं। पद संख्या 4 में सूर ने गोपियों की अनन्य कृष्ण-निष्ठा स्थापित करते हुए सगुण भक्ति मार्ग के लाभ बताये हैं। पद संख्या 5 में सूर ने गोपियों के श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम की चर्चा करते हुए निर्गुण (योग) मार्ग को कमतर सिद्ध किया है। पद संख्या 7 में सूर ने गोपियों के हवाले से कृष्ण की मनोहर छवि का उल्लेख करते हुए निर्गुण मार्ग के ऊपर सगुण भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। सूर के गोपियों की आकुलता, कृष्ण की राह तकते हुए नहीं बढ़ती है, बल्कि उद्धव के नीरस योग-संदेशों को सुन कर बढ़ती है। पद संख्या 9 में सूर ने पुनः गोपियों की कृष्ण निष्ठा का सुंदर चित्र उपस्थित किया है। गोपियाँ उद्धव के योग को तीती ककड़ी कहती है, और उन लोगों के पास ले जाने के लिए रहती हैं, जिनके चित्त अस्थिर हैं।

सूर की गोपियां तो स्थिर चित्त वाली हैं। उन्हें कृष्ण में अटूट आस्था है। इसलिए उद्धव का योग मार्ग उनके लिए बेकार है। पद संख्या 10 में सूर ने गोपियों की योग और ज्ञान मार्ग संबंधी भोली जिज्ञासाओं

की योजना करके निर्गुण पंथ को अबूझ, अनुपयोगी सिद्ध किया है। गोपियों के सीधे सादे प्रश्नों के सामने ज्ञानी उद्धव असहाय नजर आते हैं। पद संख्या 12 में सूर ने कृष्ण के वियोग में गोपियों की दशा के चित्र खींचे हैं। प्रकृति ने भी कृष्ण के वियोग में अपना स्वभाव बदल दिया है। गोपियाँ अपने प्रिय की आतुरता से प्रतीक्षा कर रही हैं। पद संख्या 14 में सूर ने कृष्ण के वियोग में गोपियों की अवस्था का मर्मस्पर्शी दृश्य उपस्थित किया है। उद्धव गोपियों द्वारा बार-बार मना करने पर भी अपने पक्ष पर डटे हुए हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें गोपियाँ दूसरे तरीके से समझाती हैं। उनकी चतुराई देखती ही बनती है। पद संख्या 16 में सूर ने गोपियों की इसी वाक्चातुरी का वर्णन किया है। उद्धव से कहती है कि हमारे तो एक ही मन था और वह कृष्ण अपने साथ मथुरा ले गए हैं, ऐसे में आपके बताए रास्ते पर हम कब तक चल सकती हैं? यदि हमारा मन हमें वापस मिल जाए तो हम वही करेंगी जैसा आप कहेंगे। पद संख्या 18 में भी यही भाव व्यक्त हुआ है। गोपियाँ उद्धव को निरुत्तर करते हुए कहती हैं कि, हमारे मन दस या बीस तो हैं नहीं कि एक कृष्ण में लग जाए तो भी दूसरा आपके निर्गुण में रम सकता है। अर्थात आपके निर्गुण को मानने की स्थिति में हम सब (गोपियाँ) नहीं हैं। पद संख्या 21 में कृष्ण के वियोग में गोपियों की काव्य दशा के मार्मिक चित्र संयोजित हैं। पद संख्या 23 में सूरदास ने माता यशोदा द्वारा उद्धव से देवकी के लिए संदेश भेजने की योजना की है। इस पद में एक माँ का सच्चा हृदय व्यक्त हुआ है। माँ को अपने से दूर गए बेटे के सुख, सुरक्षा और आश्वस्ति की हमेशा चिंता लगी रहती है। चाहे उसका बच्चा कितने ही सुख और सुविधा में ही क्यों न हो? पद संख्या 26 में सूर ने गोपियों के प्रिय कृष्ण की स्वीकारोक्ति की योजना की है। ऐसा नहीं है कि, सिर्फ गोपियाँ या ब्रजवासी ही कृष्ण के वियोग से दुखी हैं। श्रीकृष्ण स्वंय भी अपने प्रिय जनों से दूर जाकर दुखी हैं। तभी तो वे साफ-साफ कहते हैं कि, उन्हें किसी भी हाल में अपनी प्यारी ब्रज भूमि विस्मृत नहीं होती है। उन्हें यमुना के सुंदर किनारे, सघन कुंजों की छाया, ग्वाल-बालों के साथ खेलना आदि बार-बार याद आता है। वे मथुरा के वैभवपूर्ण परिवेश में रहते हुए भी जब कभी ब्रज को याद करते हैं तो बेसुध हो जाते हैं।

भ्रमरगीत

राग सारंग

पथिक[1] संदेसो कहियो जाय।
आवैगे हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाय[2]।।
याको बिलग[3] बहुत हम मान्यों जो कहि पठयो धाय[4]।
कहै लौं कीर्ति[5] मानिए तुम्हारी बड़ी[6] कियो पय[7] प्याय[8]।।
कहियो जाय नंद बाबा सों अरु गहि पकरयो पाय।
दोऊ दुखी हीन नहि पावहिं धूमरि धौरी गाय।।
यद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिनु कछु न सुहाय[9]।
सूरदास ब्रजवासी लौगनि[10] भेंटत[11] हृदय जुड़ाय[12]।। ।। 1।।

कृष्ण द्वारा माता यशोदा को भेजा गया संदेश

नंद बाबा को भेजा गया संदेश

नीके रहियो जसुमति मैया।
आवैंगे दिन चारि पाँच में हम हलधर दोउ भैया।।
जा दिन तें हम तुमतें बिछरे काहु न कह्यो 'कन्हैया'।
कबहूँ प्रात न कियो कलेवा[13], साँझ न पीन्हीं[14] चैया[15]।।
बंसी बेन[16] संभाँरि राखियो और अवेर[17] सवेरो[18]।
मति लै जाय चुराय राधिका कछुक खिलौने मेरो।।
कहियो जाय नंद बाबा सो निपट निठुर जिय कीन्हो।
सूर स्याम पहुँचाय मधुपुरी[19] बहुरि संदेस न लीन्हो।। ।। 2।।

यशोदा को कृष्ण द्वारा भेजा सांत्वना संदेश

राग काफी

आयो घोष[20] बड़ो ब्योपारी।
लादि खेंप[21] गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आय उतारी।।
फाटक[22] दै कर हाटक[23] माँगत भोरै[24] निपट सु धारी[25]।
धुर[26] ही तें खोटो[27] खायो है लए फिरत सिर भारी।
इनके कहे कौन डहकावै[28] ऐसी कौन अजानी[29]।

---

1. *यात्री,* 2. *आकुल (व्याकुल चिंतित)* 3. *बुरा मानना* 4. *दाई* 5. *यश* 6. *बड़ा किया (पाल-पोसकर)* 7. *दूध* 8. *पिलाकर* 9. *सुहाता,* 10. *लोगों को (आत्मीय जनों को)* 11. *मिलते हुए,* 12. *शीतल होता है (ठंडा हो जाता है)* 13. *नाश्ता* 14. *पीना* 15. *धन से सीधे छूटती दूध की धारा* 16. *मोर पंख* 17. *देर (विलंब),* 18. *जल्दी (शीघ्र),* 19. *मथुरा नगरी* 20. *ग्राम (गोकुल)* 21. *माल का बोझ* 22. *फटकन (सारहीन तत्व)* 23. *सोना* 24. *भोले (सीधे सादे)* 25. *समझकर* 26. *मूल, आरंभ* 27. *खोट* 28. *धोखा खाए, ठगाए* 29. *अज्ञानी, मूर्ख.*

अपनो दूध छाँड़ि को पीवै खार[30] कूप[31] को पानी।।
ऊधो जाहु सबार[32] यहाँ तें बेगि गहरु[33] जनि लावौ।
मुँहमाँग्यो[34] पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।।।3।। — उद्धव को गोपियों की उलाहना

राग घनाश्री

हम तो दुहँ भाँति फल पायो।
जो ब्रजनाथ[35] मिलै तो नीको नातरू[36] जग जस[37] गायो।।
कहै वै गोकुल की गोपी सब बरनहीन[38] लघुजाती[39]।
कहै वै कमला[40] के स्वामी[41] संग मिलि बैठीं इस पाँती[42]। — सगुण भक्ति का गुणगान
निगमध्यान[43] मुनिज्ञान अगोचर, ते भए घोषनिवासी[44]।
ता ऊपर अब साँच[45] कहो धौं मुक्ति[46] कौन की दासी?
जोग कथा, पा[47] लागो[48] ऊधो, ना कहु बारंबार[49]।
सूर स्याम तजि और भजै[50] जो वाकी जननी छार[51]।।।।4।।

राग घनाश्री

लरिकाइ[52] को प्रेम, कहो अलि, कैसे करिकै छूटत?
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित अब अंतरगति यों लूटत।। — गोपियों का वचन: बचपन के प्रेम का स्मरण
चंचल चाल मनोहर चितवनि[53] वह मुसुकानि मंद धुनि गावत।
नटवर[54] भेस नंदनदन को वह बिनोद गृह बन ते आवत।।
चरनकमल[55] की सपथ[56] करति हौं यह संदेस मोहिं बिष सम लागत।
सूरदास मोहि निमिष न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत।।।।5।।

---

30. *खारे (क्षार युक्त, नमकीन)*, 31. *कुआँ*, 32. *सबेरे* 33. *विलंब, देर*, 34. *मुँहमांगा*, 35. *श्रीकृष्ण* 36. *नहीं तो (अन्यथा)* 37. *यश*, 38. *अवर्ण* 39. *छोटी जाति की* 40. *लक्ष्मी (धन संपत्ति की देवी)*, 41. *पति (विष्णु)* 42. *पंक्ति*, 43. *शास्त्रों के ध्यान या पहुँच* 44. *ग्रामवासी, गोकुलवासी* 45. *सत्य* 46. *मोक्ष*, 47. *पाँव*, 48. *पड़ती है*, 49. *बार-बार* 50. *भक्ति करे, याद करे*, 51. *भस्म, राख* 52. *बचपन, लड़कपन (का)*, 53. *आँखें (दृष्टि)*, 54. *श्रीकृष्ण का पर्याय* 55. *चरण कमल* 56. *शपथ,*

बिलग जानि मानहु ऊधो प्यारे।
वह मथुरा काजर[57] की कोठरि[58] जे आवहिं ते कारे[59]।।
तुम कारे सुफलकसुत[60] कारे, कारे मधुप भँवारे[61]।
तिनके संग अधिक छबि उपजत कमलनैन मनिआरे[62]।।
मानहु नील[63] माट[64] तें काढ़े[65] लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी[66] सूर स्याम गुन न्यारे।।।। 6।।

मथुरा से आने वाले हर व्यक्ति के प्रति शिकायत का भाव

अँखिया हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची[67] ये बतियाँ सुनि रूखी[68]।
अवधि[69] गनत इकटक[70] मग जोवत तब एती नहिं झूखी[71]।
अब इन जोग संदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक[72] वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी[73]।
सूर सिकत[74] हठि नाव चलाओ ये सरिता[75] है सूखी।।।। 7।।

कृष्ण के लिए आकुल गोपियां

राग सारंग

जाय कहौ बूझी कुसलात[76]।
जाके ज्ञान न होय सो मानै कही तिहारी बात।।
कारो नाम, रूप पुनिकारो, कारे अंग सखा सब गात।
जौ पै भले होत कहुँ कारे तौ कत बदलि[77] सुता[78] लै जात।।
हमको जोग भोग[79] कुबजा[80] को काके हिये समात[81]?
सूरदास सेए सो[82] पति कै पाले जिन्ह तेही, पछितात।।।। 8।।

सगुण उपासना

---

57. *काजल,* 58. *कोठरी,* 59. *काले,* 60. *अक्रूर* 61. *भौंरे* 62. *सुहावना* 63. *नीली* 64. *मिट्टी का बर्तन* 65. *निकाले* 66. *यमुना (नदी),* 67. *रूपरसरत (श्री कृष्ण के सुंदर रूप में डूबी हुई)* 68. *चिकनाई रहित (सूखी),* 69. *समय,* 70. *एकटक (निरंतर, पलक गिराये बिना),* 71. *संतप्त हुई* 72. *एक बार फिर* 73. *पत्ते का दोना,* 74. *बालू,* 75. *नदी,* 76. *कुशलता (कुशल-क्षेम),* 77. *बदलकर* 78. *बेटी,* 79. *सुख (भोग-विलास, सभी तरह के सांसारिक सुख)* 80. *कुब्जा- मथुरा के राजा कंस की दासी और कृष्ण भक्त थी। वह बहुत कुरूप और कुबड़ी थी। मथुरा जाते हुए मार्ग में उसने श्रीकृष्ण का स्वागत किया और उन्हें चंदन लगाया। कृष्ण ने उसकी पीठ दबाकर उसका कुबड़ापन दूर किया और वह अपूर्व सुंदरी बन गई। कृष्ण उसके घर भी गए। इस सारे घटना क्रम से गोपियाँ ईर्ष्यालु हो गई और उन सबने कुब्जा को बहुत खरी-खोटी सुनाई थी।* 81. *समाना,* 82. *जैसे (की तरह), वही।*

राग सारंग

हमारे हरि हारिल[83] की लकरी[84]।
मन बच[85] क्रम[86] नँदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी[87]।।
जागत सोवत, सपने सौतुख[88] कान्ह कान्ह जक[89] री।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई[90] ककरी[91]।।
सोई ब्याधि हमैं लै लाए देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर तिन्है लै दीजै जिनके मन चकरी[92]।।।। 9।।

कृष्ण के प्रति गोपियों का अनन्य प्रेम

राग सारंग

निर्गुन[93] कौन देस को बासी?
मधुकर! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन भेस है कैसो केहि रसै[94] में अभिलासी।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी[95]।
सुनत मौन है रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी[96]।।। 10।।

निर्गुण पंथ की अनुपयोगिता

राग केदारो

नाहिंन रह्यौ मन में ठौर[97]।
नंदनंदन अछत[98] कैसे आनिए उर और?
चलत, चितवत, दिवस जागत, सपन सोवत राति।
हृदय ते वह स्याम मूरति[99] छन न इस उत जाति।।
कहत कथा अनेक ऊधो लोकलाभ[100] दिखाय।
कहा करौ तन प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय।
स्याम गात सरोज आनन ललित अति मृदु हास[101]।
सूर ऐसे रूप कारन मरत लोचन प्यास।।।। 11।।

कृष्ण की छवि हृदय में स्थित

---

83. *हारिल पक्षी (यह पक्षी हमेशा अपनी चोंच में लकड़ी या तिनका दबाए रहता है),* 84. *लकड़ी.* 85. *वचन (वाणी)* 86. *कर्म,* 87. *पकड़ी हुई हैं* 88. *प्रत्यक्ष* 89. *रट, धुन* 90. *कड़वी* 91. *ककडी* 92. *अस्थिर (डांवाडोल)* 93. *गुणहीन (निर्गुण ब्रह्म के लिए संकेत है)* 94. *प्रेम* 95. *कपट की बात भुमने वाली बात,* 96. *नष्ट हुई,* 97. *स्थान, जगह* 98. *रहते हुए* 99. *मूर्ति, छवि, चित्र* 100. *सांसारिक लाभ* 101. *हँसी*

बिन गोपाल बैरिन[102] भई कुंजैं[103]।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल[104] की पुंजै[105]।
बृथा[106] बहति जमुना खग[107] बोलत, बृथा कमल फूलैं अलि[108] गुंजै
पवन पानि घनसागर[109] संजीवनि दधिसुत[110] किरन भानु भई भुंजै।। कृष्ण के बिना प्रकृति भी उदास
ए ऊधो कहियो माधव सों बिरह कदन[111] करि मारत लुंजै[112]।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अंखियाँ भई बरन[113] ज्यों गुंजै[114]।। ।। 12।।

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह[115] दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुबतिन[116] को जोग संदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री! परहित डोलत धाए। गोपियों की उलाहना
वे अपने मन फेरि पाइए जे है चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपनु जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायै सताए।। ।। 13।।

राग जैतश्री

अति मलीन[117] वृषभानुकुमारी[118]।
हरि स्रमजल[119] अंतर तनु भीजे ता लालच न धुआवति[120] सारी[121]।।
अधोमुख[122] रहति उरध[123] नहिं चितवति ज्यों गथ[124] हारे थकित जुआरी[125]। राधा का वियोग
छूटे चिहुर[126] बदन कुम्हिलानो[127] ज्यों नलिनी हिमकर[128] की मारी।।
हरिसंदेस सुनि सहज मृतक भई इक बिरहिनि दूजे अलि जारी।
सूर स्याम बिनु यों जीवति हैं ब्रजबनिता[129] सब स्यामदुलारी।। ।। 14।।

---

102. *शत्रु* 103. *बाग-बगीचे* 104. *ज्वालाओं की,* 105. *समूह* 106. *व्यर्थ (बेकार में)* 107. *पक्षी* 108. *भौंरे* 109. *कपूर* 110. *चंद्रमा* 111. *छुरी* 112. *लँगड़ा बना रही है (अपंग बना रही है)* 113. *वर्ण, रंग* 114. *गुंजा, घुँघची,* 115. *स्नेह (प्रेम)* 116. *युवतियों को (युवा स्त्रियों को)* 117. *मलिन, उदास* 118. *राधा,* 119. *पसीने (से)* 120. *धुलाती है,* 121. *साड़ी* 122. *नीचे मुँह किए हुए* 123. *उर्ध्व (ऊपर)* 124. *पूंजी, संपत्ति* 125. *जुआरी (जुआ खेलने वाला)* 126. *चिकुट, केश* 127. *कुम्हला गया है* 128. *चंद्रमा* 129. *ब्रज की स्त्रियाँ (गोपियाँ)*

कृष्ण के प्रति गोपियों की भक्ति की सरल और निष्कपट अभिव्यक्ति

ऊधो ब्रज की दसा बिचारो।
ना पीछे यह सिद्धि आपनी जोगकथा बिस्तारो।।
जेहि कारन पठए नंदनंदन सो सोचहु मन याहीं।।
केतिक बीच बिरह परमारथ जानत हौ किधौं नाहीं।।
तुम निज दास जो सखा स्याम के संतत निकट रहत हौ।
जल बूड़त अवलंब फेन को फिरि कहा गहत हौ?
वै अति ललित मनोहर आनन कैसे मनहिं बिसारौं[130]।
जोग जुक्ति औ मुक्ति बिबिध बिधि वा मुरली पर वारौं।।
जेहि उर बसै स्यामसुंदर घन क्यों निर्गुन कहि आवै।
सूरस्याम सोइ भजन बहावै जाहि दूसरी भावै।। ।। 15।।

राग घनाश्री

गोपियों का उपालंभ और वाक्चातुर्य

ऊधो! मन नहिं हाथ[131] हमारे।
रथ चढ़ाय हरि संग गए लै मथुरा जबै सिधारे।।
नातरू कहा जोग हम छाँड़हि अति रुचि कै तुम ल्याए।
हम तौ झकति[132] स्याम की करनी मन लै जोग पठाए।।
धजहू मन अपनी हम पावै तुमतें होय तो होय।
सूर, सपथ हमैं कोटि तिहारी कहौ करैगी सोय।। ।। 16।।

गोपियों की विरह वेदना

ऊधो! इतनी कहियो जाय।
अति कृसगात[133] भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।।
जल समूह बरसत अँखियन तें, हूँकत[134] लीने नांव[135]।
जहाँ जहाँ गोदोहन[136] करते ढूँढ़त सोइ सोइ ठाँव[137]।
परति पछार[138] खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल है दीन।
मानहुं सूर काढ़ि डारे हैं बारिमध्य[139] तें मीन।। ।। 17।।

---

130. *भुलाऊँ (भुलाया जाए)*, 131. *वश में*, 132. *झींखती है (झक मारती है)*, 133. *कृशकाय (दुर्बल)* 134. *हूँकती हैं (हूँकने लगती है)*, 135. *नाम (श्रीकृष्ण का नाम)*, 136. *गायों का दूध निकालते थे* 137. *स्थान, जगह* 138. *पछाड़* 139. *जल के बीच से या जल से*

ऊधो! मन नाहीं दस बीस।
एक हुतो[140] सो गयो हरि के संग, को अराध[141] तुव ईस?
भइं अति सिथिल[142] सबै माधव[143] बिनु जथा देह बिन सीस[144]।
स्वासा[145] अटकि[146] रहे आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस[147]।।
तुम तौ सखा स्यामसुंदर के सकल जोग के ईस।
सूरजदास रसिक की बतियाँ पुरवी[148] मन जगदीस।।18।। ।। 18।।

गोपियों का सहः कथन

देखियत कालिंदी अति कारी।
कहियो, पथिक! जाय हरि सों ज्यों भई बिरह जुर जारी[149]।।
मनो पलिका[150] पै परी धरनि धँसि तरँग तलफ तनु जारी।
तटबारू[151] उपचार चूर[152] मनो, स्वेद[153] प्रवाह पनारी[154]।।
बिगलित कच[155] कुस[156] कास[157] पुलिन मनो, पंक[158] जु कज्जल[159] सारी।
भ्रमर मनौं मति भ्रमर चहूँदिसि[160], फिरति हैं अंग दुखारी।।
निसिदिन चकई ब्याज[161] बकत[162] मुख, किन मानहुँ अनुहारी[163]।
सूरदास प्रभु जो यमुना गति[164] सो गति भई हमारी।।।। 19।।

वियोग वर्णन

हमको सपनेहू में सोच[165]।
जा दिन ते बिछुरे नंदनंदन ता दिन तें यह पोच[166]।।
मनो गोपाल आए मेरे घर हँसि करि भुजा गही।
कहा करौं बैरिनि भई निँदिया, निमिष न और रही।।
ज्यों चकई प्रतिबिंब देखिकै आनंदी पिय जानि।
सूर, पवन मिस[167] निठुर बिधाता[168] चपल कर्‌यौ जल आनि।। ।। 20।।

कृष्ण स्मृति

---

140. *था* 141. *आराधना करे (पूजा करे)* 142. *शिथिल* 143. *कृष्ण* 144. *सिर* 145. *श्वास* 146. *अटक गई है (रुक गई है)* 147. *वर्ष, साल* 148. *पूर्ण करें,* 149. *विरह ज्वर से जली (कृष्ण के)* 150. *पलंग* 151. *तन* 152. *चूर्ण* 153. *पसीना,* 154. *धारा, बहाव* 155. *बाल, केश* 156. *कुशा (एक प्रकार की घास)* 157. *एक प्रकार की घास* 158. *कीचड़* 159. *काली, काजल,* 160. *चारों दिशाओं में (चारो तरफ)* 161. *बहाने से* 162. *कहती है* 163. *समता* 164. *दशा, स्थिति* 165. *चिंता* 166. *चिंता , सोच, बुरा* 167. *बहाने से* 168. *ब्रह्मा।*

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस[169] ऋतु हम पै जब तें स्याम सिधारे।।
दृग[170] अंजन लागत नहिं कबहूँ, उर कपोल[171] भए कारे।
कंचुकि[172] नहिं सूखत सुनु सजनी! उरबिच[173] बहत पनारे[174]।।
सूरदास प्रभु अंबु[175] बढ्यो है, गोकुल लेहु उबारे।
कहँ लौं कहौं स्यामघन सुंदर बिकल होत अति भारे।। ।। 21।।

गोपियों की करुण दशा

राग नट

कहत कत परदेसी[176] की बात?
मंदिर-अरध-अवधि[177] बदि[178] हम सों, हरि अहार[179] चलि जात।।
ससि रिपु[180] बरष सूर रिपु युग बर, हरि रिपु किए फिरै घात।
मघ पचक[181] लै गए स्यामघन, आय बनी यह बात।।
नखत[182], ख्वेद[183], ग्रह जोरि अर्ध[184] करि को बरजै[185] हम खात।
सूरदास प्रभु तुमहिं मिलन कों कर मीड़ति[186] पछितात।। ।। 22।।

कृष्ण से मिलन की चाह

यशोदा का वचन उद्धवप्रति

राग सोरठा

सँदेसो देवकी सों कहियो।
हौं तो धाय[187] तिहारे सुत की कृपा करत ही रहियो।।
उबटन[188] तेल और तातो जल देखत ही भजि[189] जाते।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती करम करम करि न्हाते।।
तुम तो टेव[190] जानतिहि हैहै तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतेहि माखन रोटी भावै।।
अब यह सूर मोहि निसिबासर बड़ों रहत जिय सोच।
अब मेरे अलक लड़ैते[191] लालन है है करत संकोच।। ।। 23।।

यशोदा का देवकी को संदेश

---

169. *पावस ऋतु* 170. *आँखों में,* 171. *हृदय और गाल* 172. *चोली* 173. *हृदय के बीच से (छाती के बीच से)* 174. *नाले* 175. *जल* 176. *बाहरी व्यक्ति (परदेशी)* 177. *एक पक्ष (पद्रंह दिन)* 178. *वादा करके (कहकर)* 179. *मास (माह)* 180. *दिन (अर्थात् दिन एक वर्ष के समान व्यतीत होता है)* 181. *मघा से लेकर पाँचवा नक्षत्र चित्रा अर्थात चित्र* 182. *नक्षत्र* 183. *वेद (चार वेद)* 184. *आधा,* 185. *शेष (बचा हुआ)* 186. *मलती हुई* 187. *धाय (सेविका)* 188. *उबटन (हल्दी और सरसों का लेप)* 189. *भागते थे* 190. *उपाय* 191. *दुलारे, लाडले।*

जद्यपि मन समुझावत लोग।
सूल होत नवनीत देखिकै मोहन के मुख जोग।।
प्रात समय उठि माखन रोटी को बिन माँगे दैहै?
को मेरे बालक कुँवर कान्ह को छन छन आगो लैहै?
कहियो जाय पथिक! घर आवै राम स्याम दोउ भैया।
सूर वहाँ कत होत दुखारी जिनके मो सी मैया।। ।।24।।

यशोदा की विरह वेदना और मातृसुलभ चिंता

कहै लौं कहिए ब्रज की बात।
सुनहु स्याम! तुम बिनु उन लोगन जैसे दिवस बिहात।
गोपी, ग्वाल, गाय, गोसुत सब मलिनबदन[192], कृसगात।
परम दीन जनु सिसिर-हेम-हत[193] अंबुजगन[194] बिनु पात।।
जो कोउ आवत देखति हैं सब मिलि बूझति कुसलात[195]।
चलन न देत प्रेम आतुर उर, कर चरनन लपटात[196]।।
पिक[197], चातक[198] बन बसन न पावहिं बायस[199] बलिहि[200] न खात।
सूर स्याम संदेसन के डर पथिक न वा मग जात।। ।।25।।

सम्पूर्ण ब्रज विरहमग्न

कृष्ण वचन उद्धवप्रति

राग धनाश्री

ऊधो! मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता[201] की सुंदरि कगरी[202] अरु कुंजन की छाहीं।।
वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक[203] दुहावन जाहीं।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल[204] नाचत गहि गहि बाहीं[205]।
यह मथुरा कंचन की नगरी मनि मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति[206] आवति वा सुख की जिय उमगत, तनु नाहीं[207]।।
अनगन[208] भांति करी बहु लीला जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहै मौन है, यह कहि कहि पछिताहीं।। ।।26।।

कृष्ण की स्वीकारोक्ति

---

192. *उदास (मलिन मुख वाले हैं)* 193. *हित या पाले के मारे हुए।* 194. *कमल समूह, कमल दल,* 195. *कुशलता (कुशल क्षेम),* 196. *लिपट जाती है* 197. *कोयल* 198. *चातक चक्रवाक पक्षी,* 199. *कौवा* 200. *बलि (अन्न)* 201. *यमुना,* 202. *किनारा,* 203. *गोशाला* 204. *कोलाहल, शोर* 205. *बाहें* 206. *याद* 207. *शरीर का ध्यान नहीं रहता है।* 208. *अनगिनत।*